Ñfr % fo'knJh lEesnf'k[kjdLVoiwtufoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj]{kekewfrZ
vkpk;ZJh 108 fo'knlkxjtheqkjkt

laLdj.k % izFke&2016 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfuJh 108 fo'kkylkxjtheqkjkt

lgk;sh % {kqYydJh 105 folkselkxjtheqkjkt
{kq-JhHkfDrHkkjrhekrkth
{kq-JhdkRlY;Hkkjrhekrkth

laiknu % cz-T;ksfrnhnh¼9829076085½cz-vkLFkknhnh]cz-liukrnhnh

la;kstu % cz-lksuwnhnh]cz-vkjrhnhnh

lEidZlw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIrLFky % 1 tSuljksojlfefr]fuEZydqekjxksèkk]
2142]fuEZyfudqat]jsfM;kseksdsZV
efugkjksadkjkLrk]t;iqj
Qksu%0141&2319907¼ikj½eks-%9414812008

2 Jhjkts'kdqekjtSuBsdsnkj
,&107]oqèkfogkj]vyoj]eks-%9414016566

3 fo'knlkfgR;dsUnz
JhfnxEcjtSueafnjdqvk¡dkykktSuiqjh
jsokM+h¼gfj;k.kk½]9812502062]09416888879

4 fo'knlkfgR;dsUnz]gjh'ktSu
t;vfjgUrVªsMlZ]6561usg:xyh
fu;jykydÙkhpkSd]xka/khuxj]fnYyh
eks-09818115971]09136248971



# तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर स्तवन

सोरठा– सम्मेदाचल धाम, शाश्वत तीरथराज है।
बारंबार प्रणाम, मंगलकारी जगत् में।।

श्री सम्मेद शिखर मंगलमय, शाश्वत तीर्थराज पावन।
भव्य जनों को मोक्ष प्रदायक, तीन लोक में मन भावन।।
जो त्रिकाल तीर्थंकर जिन का, मुनियों का है मुक्तिधाम।
उन सिद्धों के पद पंकज अरु, सिद्ध क्षेत्र को विशद प्रणाम।।1।।

काल अनादि अरु अनंत है, कोई न सृष्टि का कर्त्ता।
जीव रहा चैतन्य स्वरूपी, सर्व लोक सुख-दुःख भर्त्ता।।
रत्नत्रय को पाने वाला, जीव जगत् मंगलकारी।
संयम पथ पर बढ़ने वाला, मोक्ष मार्ग का अधिकारी।।2।।

उज्ज्वल तीर्थ क्षेत्र पावन है, सब तीर्थों में रहा प्रधान।
सरस सुउन्नत है गुणधारी, सुखदायक है अचल महान्।।
अतिशय महिमा कहने वाला, कोई जग में नहीं समर्थ।
लघु शब्दों में महिमा गाना, मेरी चेष्टा का क्या अर्थ।।3।।

भक्ति के उद्रेक हृदय में, मेरे नहीं समाते हैं।
अपनी क्षमता से महिमा हम, भाव सहित कुछ गाते हैं।।

**मधुवन का है ताज मनोहर, गगन क्षेत्र जिसका पावन।**
**ओर छोर न दिखता जिसका, भूमण्डल है सिंहासन॥4॥**
**क्या राजा? क्या रंक? हरी क्या? चक्रीकाम देव सारे।**
**इन्द्र और नागेन्द्र सभी मिल, बोलें अनुपम जयकारे॥**
**तीर्थक्षेत्र के वंदन का शुभ, इन सब ने भी फल पाया।**
**तीर्थंकर अरु तीर्थ क्षेत्र को, 'विशद' हृदय से जब ध्याया॥5॥**

पुष्पांजलिं क्षिपेत

## श्री सम्मेदशिखर पूजन

### स्थापना

**दोहा– तीर्थ क्षेत्र सम्मेद गिरि, शाश्वत रहा महान।**
**विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।



(मणुयानंद छन्द)

**क्षीर सम नीर हम श्रेष्ठ भर लाए हैं,**
**रोग जन्मादि के नाश को आए हैं।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**नीर के साथ केशर घिसाई अहा,**
**लक्ष्य भव ताप हरना हमारा रहा।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्वेत अक्षत शुभ मुक्ताफल सम लिए,**
**पूजा के भाव से यहाँ अर्पित किए।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प केशर में अक्षत रंगाए हैं,**
**काम के वाण विध्वंश को आए हैं।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध नैवेद्य घृत के लिए यह भले,**
**शीघ्र व्याधि क्षुधादि की मम गले।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नमय दीप से, श्रेष्ठ ज्योती जले,**
**मोहतम जो लगा, पूर्ण वह अब गले।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



**धूप दश गंध से, यह बनाई सही,**
**नाश हो कर्म का, प्राप्त हो शिव मही।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीफलादि प्रभु के चरण में हम धरें,**
**मोक्षफल शीघ्र ही प्राप्त हम अब करें।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**नीर गंधादि के अर्घ्य हम लाए हैं,**
**प्राप्त करने सुपद आज हम आए हैं।**
**तीर्थ की वन्दना आज करके सही,**
**भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देते शांतिधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिन पूजा व्रत में विशद, दोष लगे न कोय॥

शान्तये शांतिधारा...

जिन पूजा के भाव से, होवें कर्म विनाश।
जन्म मरण की श्रृंखला, का हो जाए नाश॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

## जयमाला

दोहा– शाश्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
जयमाला गाते यहाँ, करने जिन गुण गान॥

( शम्भू छंद )

तीर्थराज सम्मेद शिखर शुभ, सिद्ध क्षेत्र कहलाता है।
भव्य जीव तीर्थंकर आदी, को शिवपुर पहुँचाता है॥
तीर्थंकर जिन भरत क्षेत्र के, यहाँ से मुक्ति पाते हैं।
स्वर्ग से आकर देव इन्द्र शुभ, प्रभु के चरण बनाते हैं॥1॥

तीर्थ वन्दना करने हेतू, जैन अजैन सभी जाते।
भाव शुद्धि से शक्ति हीन भी, चरणों के दर्शन पाते॥



बाल वृद्ध लूले लंगड़े भी, पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
देव यहाँ भूले भटके को, रस्ता सही दिखाते हैं॥2॥

भाव सहित वन्दन करने से, दुर्गति से बच जाते हैं।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, ऐसा पुण्य कमाते हैं॥
रत्नत्रय को धारण कर जो, आतम ध्यान लगाते हैं।
अल्प काल में कर्म नाशकर, मोक्ष महल को जाते हैं॥3॥

हुण्डावसर्पिणी काल के कारण, बीस जिनेश्वर मोक्ष गये।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, ध्यान लगाकर कर्म क्षये॥
तीव्र पाप का उदय हो जिनका, वह दर्शन न पाते हैं।
चक्रवात तूफान से घिरकर, अन्धे वत् हो जाते हैं॥4॥

अहंकार करने वाले कोई, गिरि पर न चढ़ पाते हैं।
कई बार कोशिश करके भी, नीचे ही रह जाते हैं॥
मोती बने ज्वार के दाने, नम्र भाव जिनने धारे।
किन्तू पापी और कषाई, दर्शन करने को हारे॥5॥
तीर्थराज की करो वन्दना, पुण्य सुफल अतिशय पाओ।
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, भाग्य शीघ्र ही अजमाओ॥
मुनि आर्यिका बनकर भाई, या श्रावक के व्रत पाओ।
मुक्ति पाएँ तीर्थराज से, 'विशद' भावना यह भाओ॥6॥

**दोहा– महिमा तीरथ राज की, को कर सके बखान।**
**शिवपद पाए जीव जो, जाने वह भगवान॥**

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

## चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ

**तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, श्रेष्ठ ऋद्धि सिद्धी धारी।**
**पूजनीय गणनायक उनके, हुए जहाँ में अविकारी॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥1॥**

**दोहा– गण नायक तीर्थेश के, हुए प्रमुख चौबीस।**
**मुक्ति पद पाएँ 'विशद', झुका रहे हम शीश॥**

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



## श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक ( ज्ञानधर कूट )

**कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।**
**हे कुन्थुनाथ त्रयपद के स्वामी!, किया आपने शिवपुर वास॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

**दोहा– तीन लोक के श्रेष्ठतम, कुन्थुनाथ भगवान।**
**सारे कर्म विनाश कर, पाया पद निर्वाण॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री नमिनाथजी की टोंक ( मित्रधर कूट )

**गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।**
**निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान॥**

**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।3।।**

**दोहा– रत्नत्रय को धारकर, कर्म घातिया नाश।**
**नमि जिन मुक्ती पा लिए, करके ज्ञान प्रकाश।।**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालिस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री अरहनाथजी की टोंक ( नाटक कूट )

**इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।**
**वियोग आपसे हे अर जिन! अब, और सहा न जाता है।।**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।4।।**

**दोहा– कर्मारिनाशे सभी, अरहनाथ भगवान।**
**त्रय पद के धारी हुए, शिवपुर किया प्रयाण।।**



ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास। )**

## मल्लिनाथजी की टोंक ( संबल कूट )

**श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।**
**गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए।।**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।5।।**

**दोहा– जीते काम कषाय को, बने श्री के नाथ।**
**शिवपुर के राही बने, जग में मल्लिनाथ।।**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक ( संकुल कूट )

**सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।**
**स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥6॥**

**दोहा– सर्व कर्म को नाशकर, शिवपुर किया प्रयाण।**
**श्रेयस पाने को 'विशद', करते हम गुणगान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( संकुल नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास। )**

## श्री पुष्पदंतजी की टोंक ( सुप्रभ कूट )

**पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।**
**रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण॥**



**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥7॥**

**दोहा– पुष्पदन्त जिन आप हैं, अविनाशी अविकार।**
**चरण वन्दना कर रहे, हे प्रभु! बारम्बार॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री पदमप्रभुजी की टोंक ( मोहन कूट )

**दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभ, पाकर पाये केवल ज्ञान।**
**कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥8॥**

**दोहा– पद्म प्रभु के दर्श से, होता है अति हर्ष।**
**सद्गुण का भवि जीव के, होता है उत्कर्ष॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से

श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तासी लाख तियालीस हजार सात सौ सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक ( निर्जर कूट )

**मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।**
**कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥9॥**
**दोहा– शिवपुर जाके आपने, कीन्हा है विश्राम।**
**मुनिसुव्रत के पद युगल, करते चरण प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी नौ करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( निर्जर नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**



## श्री चन्द्रप्रभजी की टोंक ( ललित कूट )

**चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।**
**ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥10॥**
**दोहा– उज्ज्वल गुण धरचन्द्र प्रभु, उज्ज्वलता के कोष।**
**सर्व कर्म क्षय कर हुए, प्रभु आप निर्दोष॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री आदिनाथजी की टोंक

**आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।**
**स्वयं बुद्ध हे नाथ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥11॥**

**दोहा– आदिम तीर्थंकर हुए, भक्तों के भगवान।**
**अष्टापद से शिव गये, करने जग कल्याण॥**

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## श्री शीतलनाथजी की टोंक ( विद्युतवर कूट )

**जल चन्दन से भी अति शीतल, शीतल नाथ कहाए हैं।**
**हे नाथ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥12॥**
**दोहा– शीतलता इस भक्त को, कर दो 'विशद' प्रदान।**
**शिव नगरी के ईश तुम, दो शिव पद का दान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**



## श्री अनन्तनाथजी की टोंक ( स्वयंप्रभ कूट )

**गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।**
**गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥13॥**
**दोहा– पूज्य हुए इस लोक में, हे अनन्त! जिन आप।**
**तव गुण पाने के लिए, करूँ नाम का जाप॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री संभवनाथजी की टोंक ( धवल कूट )

**हे सम्भव! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा।**
**जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का मम् लक्ष्य रहा॥**

**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥14॥**
**दोहा– सम्भव जिन सम्भाव से, किये कर्म का नाश।**
**भ्रमण नाश मम हो प्रभु, हो शिवपुर में वास॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास। )**

## श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

**है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।**
**जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥15॥**
**दोहा– जगत पूज्यता पा गये, वासुपूज्य भगवान।**
**चंपापुर में पाए हैं, प्रभु पाँचों कल्याण॥**



ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## श्री अभिनंदननाथजी की टोंक ( आनन्द कूट )

**हे अभिनन्दन! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।**
**आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥16॥**
**दोहा– अभिनंदन तव चरण में, वन्दन मेरा त्रिकाल।**
**भक्त आपको पूजकर, होते मालामाल॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास। )**

## श्री धर्मनाथजी की टोंक ( सुदत्तवर कूट )

**हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।**
**तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥17॥**
**दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।**
**जग जीवों को आपने, दिया धर्म का ज्ञान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री सुमतिनाथजी की टोंक ( अविचल कूट )

**हे सुमतिनाथ! तुमने जग को, शुभ मति दे शिवपद दान किया।**
**भक्तों को तुमने करुणाकर, होकर सौभाग्य प्रदान किया॥**



**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥18॥**
**दोहा– कुमति विनाशक आप हो, सुमति नाथ भगवान।**
**हमको भी हे नाथ! अब, कर दो सुमति प्रदान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक ( कुन्दप्रभ कूट )

**हे शांतिनाथ! शांती दाता, जन-जन को शांती प्रदान करो।**
**भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥19॥**
**दोहा– शान्ति का दरिया बहे, शान्तिनाथ के द्वार।**
**सद्भक्ति से भक्त का, होता बेड़ा पार॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट

से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री महावीर स्वामी की टोंक

**तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।**
**प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्‌गद्‌ होकर हर्षाया है॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।20॥**

**दोहा– महावीर हे वीर! जिन, सन्मति हे अतिवीर!।**
**वर्धमान पावापुरी, से पाए भव तीर॥**

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक ( प्रभास कूट )

**जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।**
**प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है॥**



**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।21॥**

**दोहा– जिसने सुपार्श्व का भाव से, किया 'विशद' गुणगान।**
**अल्प समय में जीव वह, होवें प्रभु समान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री विमलनाथ जी की टोंक ( सुवीर कूट )

**हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।**
**जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मष पूर्ण हरें॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।22॥**

**दोहा– विमलनाथ तव चरण में, पाएँ हम विश्राम।**
**हमको शुभ आशीष दो, बारम्बार प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ

लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**( सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास। )**

## श्री अजितनाथजी की टोंक ( सिद्धवर कूट )

**प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।**
**पाकर के केवलज्ञान प्रभु, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।23॥**
**दोहा– रहे अपावन भक्त हम, पावन हो प्रभु आप।**
**अजितनाथ का दर्श कर, कट जाते हैं पाप॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**( सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास। )**

## श्री नेमिनाथ की टोंक

**हे नेमिनाथ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।**
**जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो॥**



**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।24॥**
**दोहा– राज्य तजा राजुल तजी, छोड़ा सब धन धाम।**
**गिरनारी से शिव गये, तव पद 'विशद' प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## श्री पार्श्वनाथजी की टोंक ( स्वर्णभद्र कूट )

**उपसर्गों में सघर्षों में, तुमने समता को धारा है।**
**कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व! आपके हारा है॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।25॥**
**दोहा– ध्यान लीन होकर प्रभु, सुतप किया दिन रैन।**
**समता धर पार्श्व जिन, हुए नहीं बैचेन॥**

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस

हजार सात सौ ब्यालिस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**( स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास। )**

## श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ ( चौपड़ा कुण्ड )

**दोहा– पार्श्वनाथ! करुणा निधान, तव महिमा है मंगलकारी।**
**शांतिदूत! जिनवर प्रधान, हे वीतराग! जग हितकारी॥**
**जो नत होकर तव चरणों में, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाता है।**
**सौभाग्य प्राप्त कर लेता वह, अन्तिम शिवपुर को जाता है॥**
**हम भक्ति करने हेतु नाथ, तव चरण शरण में आये हैं।**
**यह अर्घ्य बनाकर प्रासुक शुभ, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥**

ॐ ह्रीं श्री चौपड़ा कुण्ड विराजित चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ

**प्रभु अशुभ भाव की ज्वाला यह, सदियों से जलाती आई है।**
**उसमें ही जलते रहे 'विशद', चेतन की सुधि न पाई है॥**



**यह वसु द्रव्यों का अर्घ्य बना, वसु गुण प्रकटाने आए हैं।**
**पाने अनर्घ अविनाशी पद, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः, श्री सम्मत्तणाण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्ट गुण संयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– तीर्थराज सम्मेदगिरि, शाश्वत् रहा त्रिकाल।**
**भाव सहित गाते विशद, जिसकी हम जयमाल॥**

**( पद्धडि छंद )**

**है तीर्थराज जग में प्रधान, सम्मेद शिखर तीरथ महान्।**
**तीर्थंकर करते जहाँ ध्यान, शाश्वत् कहलाया मोक्ष थान॥**
**शुभ कूट बने जिसपे मनोग, साधू कई धारें जहाँ योग।**
**पर्वत ऊँचा सोहे महान्, जो हरा-भरा है शोभमान॥**
**सब तीर्थ वन्दना करें जीव, जो पुण्य प्राप्त करते अतीव।**
**शीतल नाला है जहाँ खास, शुभ बना चौपड़ा कुण्ड पास॥**

**श्रीचन्द्रप्रभू हैं पार्श्वनाथ, जिनके पद में मम् झुका माथ।**
**फिर प्रथम कूट जानो महान्, गणधर चरणों का रहा धाम॥**
**है कूट ज्ञानधर कुन्थुनाथ, जो मोक्ष-सुपद के हुए नाथ।**
**फिर कूट मित्रधर है प्रधान, नमिनाथ मोक्ष पाए महान्॥**
**फिर नाटक कूट है शोभमान, प्रभू अरहनाथ का मोक्ष थान।**
**फिर कूट सु संवल रहा पास, प्रभू मल्लिनाथ का रहा खास॥**
**आगे है संकुल कूट धाम, श्री श्रेयनाथ का मोक्ष धाम।**
**फिर पद्मप्रभु का कूट जान, शुभ कूट सुमोहन रहा मान॥**
**फिर निर्जर कूट गाया विशेष, शिव पाए मुनिसुव्रत जिनेश।**
**फिर ललित कूट का रहा नाम, श्री चन्द्रप्रभु का मोक्ष धाम॥**
**फिर आदिनाथ की टोंक आय, जो अष्टापद से मोक्ष पाय।**
**फिर विद्युतवर है कूट खास, शीतल जिन पाए मोक्ष वास॥**
**शुभ कूट स्वयंप्रभ अग्र जाय, श्री अनन्तनाथ शिव लिए पाय।**
**फिर सम्भव जिनका धवल कूट, जो स्वयं कर्म से गए छूट॥**
**श्री वासुपूज्य जिनवर महान्, जिन पद के दर्शन हों महान्।**
**आनन्द कूट है जग प्रधान, अभिनन्दन जिन पूजें महान्॥**



**शुभ कूट सुदत्तवर पर सदैव, हम पूज रहे जिन धर्म देव।**
**फिर कूट सुअविचल पे जिनेश, जिन सुमति पूजते हैं विशेष॥**
**शुभ कूट कुन्दप्रभ है महान्, हम पूजें शांति जिन प्रधान।**
**फिर महावीर की टोंक आय, जो पावापुर से मोक्ष पाय॥**
**है कूट सुपार्श्व जिन का प्रभास, प्रभु पाए जहाँ से मोक्ष वास।**
**फिर विमलनाथ का रहा धाम, जानो सुवीर शुभ कूट नाम॥**
**शुभ स्वर्णभद्र फिर कूट आय, शिव पाए श्री पारस जिनाय।**
**यह पूज्य बताया तीर्थधाम, मम सिद्धों के पद में प्रणाम॥**

**घत्ता छंद**

**जय-जय शिवकारी, भव भयहारी, तीर्थराज जग में पावन।**
**है मंगलकारी, पाप निवारी, 'विशद' लोक में मन भावन॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– शाश्वत तीरथराज है, गिरि सम्मेद महान्।**
**'विशद' भाव से पूजता, जिसको सकल जहान॥**

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

# श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान॥
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण॥

*(चौपाई)*

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया॥
संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित्त जो दीन्हें।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते॥
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो॥
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए॥
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो॥
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।



कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए॥
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते॥
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी॥
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए॥
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली॥
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो॥
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते॥
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे॥
कूट प्रभास है महिमाशाली, जिन सुपार्श्व पद चिन्हों वाली।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए॥
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी॥

पक्षी भी तन्मय हो जाते मानो प्रभु की महिमा गाते।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले॥
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते॥
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें॥
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें॥
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।
कभी स्वान बनकर आ जाते, डोली वाले बनकर आते॥
गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।
तुमरे गुण सारा जग गांए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए॥
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा॥
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता॥
तुमरी धूल लगाकर माथे, भाव सहित तव गाथा गाते।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया॥
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।



सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए॥
दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश॥
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

## निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की॥
करूँ आरती.....
भव-भव के दुःख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥
करूँ आरती.....
अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की॥

करूँ आरती.....

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की॥
करूँ आरती.....

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्म प्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की॥
करूँ आरती.....

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की॥
करूँ आरती.....

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की॥
करूँ आरती.....

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुबीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की॥
करूँ आरती.....

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की॥
करूँ आरती.....



# श्री सम्मेदशिखर की आरती

तर्ज – आनन्द अपार है.....

भक्ति का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है।टेक॥
दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं।-2
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं-2
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धु, महिमा का न पार है॥
श्री सम्मेद.....॥1॥

बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाए हैं-2
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं-2
शाश्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है॥
श्री सम्मेद.....॥2॥

जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाएँगे।-2
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाएँगे।-2
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है॥
श्री सम्मेद.....॥3॥

भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशु गति नश जाए।-2
दुष्कृत अल्प आयु भी, वह प्राणी फिर ना पाए।-2
जन-जन के जीवन में गिरि का, 'विशद' बड़ा उपकार है॥
श्री सम्मेद.....॥4॥

तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।-2
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं।-2
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है॥
श्री सम्मेद.....॥5।



## पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर॥
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।
विशद भावना है यही, पाएँ हम शिवधाम॥

( चौपाई )

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पदधारी, तीन लोक में मंगलकारी॥
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए॥
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया॥
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला॥
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥

तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया॥
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए॥
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले॥
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई॥
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया॥
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥



गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए॥
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई॥
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते॥
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते॥
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो॥
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई॥
तीर्थ अडिंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥

( दोहा )

पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

## श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभु पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें, प्रभु कर दो भव से पार
आज थारी...
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्में हैं काशीराज-आज थारी.....॥1॥
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज- आज थारी.....॥2॥
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी.....॥3॥



नथमल को तुम स्वप्न दिखाया, पर्वत के ऊपर प्रगटाया।
चंवलेश्वर के धाम- आज थारी.....॥4॥
चँवले की मूरत है प्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
हुए कई चमत्कार- आज थारी.....॥5॥
दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव-दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी.....॥6॥
"विशद" आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी.....॥7॥

भजन ( तर्ज– तुमसे लागी लगन... )

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया।
अश्वसेन कुँवर, धरी वन की डगर, संयम वारे॥

हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
तुमने छोड़ा है धनधाम सारा, छोड़ जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारें॥
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
लिये उपकार जिन, पार्श्व जी स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे॥
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।
धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे॥
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, फण का छत्र बना, उपसर्ग टारे॥
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥
केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
शिखर सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे॥
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे॥



# निर्वाण काण्ड

दोहा– वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
विशद काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज॥

*(शम्भू छंद)*

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश॥
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण॥
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार॥
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान॥
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण॥
श्री भलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम साथ॥
राम हनू सुग्रीव नील अरु गय गवाख्य महानील सुडील।

कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील॥
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज॥
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार॥
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ॥
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार॥
वंशस्थल के पश्चित दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण॥
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण॥
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश॥
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण॥
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार॥



पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्परा।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार॥
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण॥
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ॥
पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में प्रभु जी पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।

शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥

*(अञ्चलिका)*

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ महा इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प धरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दुःख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥



# श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान

**रचयिता : प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य**

**श्री 108 विशदसागर जी महाराज**

%%vFkZ lkStU;%%
Jhiz|qEudqekj ih;w'kdqekj fufrudqekj lksuh
¼uxjdksVdkys½
eq[;Mkd?kj ds lkeus] Vksad] jktLFkku-eks-%9829614701

Lo- Jh xEHkhjey th dh iq.;Le`fr esa
Jherh rkjkorh tSu vfuy dqekj udqy dqekj tSu ljkZQ
Vksad] jktLFkku-eks-%9252515110

eqnzd%ikjlizdk'ku] fnYyh Qksu ua-%09811374961] 9811363613
E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com